पहली, एक तो भारत में E.I.C. के अलावा अन्य यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ भी थी, जिनकी प्रतिस्पर्धा के कारण क्रय एवं विक्रय पक्ष पर एकाधिपत्य (Monopoly) की स्थापना नहीं की जा सकती थी।

दूसरी बाधा यह थी कि मुगलों प्रशासनिक व्यवस्थाएँ, जो E.I.C. के व्यापारिक एकाधिपत्य की स्थापना के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा रही थीं।

स्पष्ट है कि अगर इन दोनों बाधाओं को E.I.C. को दूर करना था, तो उसे एक व्यापारिक-कंपनी के साथ राजनैतिक सत्ता भी

कहना कि एक व्यापारिक कंपनी से राजनैतिक सत्ता में संक्रमण केवल इतिहास की एक दुर्घटना मात्र है उचित नहीं है। वास्तव में E.I.C. और साम्राज्यवादी शोषण की आवश्यकता ने E.I.C. को एक राजनैतिक सत्ता बनने के लिये बाध्य कर दिया था। E.I.C. अगर एक राजनैतिक सत्ता बनी तो उसका एक अन्य कारण भी था,